B.A. (Hons) Part – III
Group – Ⓐ
By – Dr. Ramendra Kumar Singh.
H.O.D, Psychology
D. K. College, Dumraon (Buxar)
VKSU, Ara (Bhojpur)

PHYSICAL ENVIRONMENT & WORK-EFFICIENCY

प्रश्न :- औद्योगिक कार्यकुशलता एवं शोरगुल से आप क्या समझते हैं ! औद्योगिक कार्यकुशलता पर शोरगुल के प्रभावों का वर्णन करें। (Effects of noise on work-effeciency)

औद्योगिक मनोविज्ञान का मूल उद्देश्य उत्पादनकर्ता यानी कर्मचारियों का कल्याण करने और उत्पादन में वृद्धि लाने के लिये मनोवैज्ञानिक कार्य प्रणालियों का खोज करना है। औद्योगिक इकाईयों में दो तरह के वातावरण होते हैं –(A) भौतिक वातावरण और Ⓑ मनोवैज्ञानिक वातावरण। दोनों ही वातावरण का गहरा सम्बन्ध कर्मचारी/श्रमिक एवं उसकी कार्यकुशलता से है। भौतिक वातावरण से तात्पर्य उन उत्तेजनाओं से है जिनका प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रभाव कर्मचारियों या श्रमिकों पर पड़ता है। इसके तहत उस विशेष औद्योगिक इकाई के अन्दर की ताप, प्रकाश, शोरगुल, आद्रता मशीनें आदि को रखा जा सकता है।

भौतिक वातावरण का एक प्रमुख कारक शोरगुल है, जिसका कामगारों की कार्यकुशलता से किसी न किसी रूप में सम्बन्ध होता है। कारखानों या उद्योग में चलनेवाली मशीनों की आवाजें एवं अन्य तरह की शोर के बीच कामगारों को काम करना पड़ता है। शोरगुल के सम्बन्ध में स्मिथ आदि मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि इसे परिभाषित नहीं किया जा सकता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति पर इसका प्रभाव अलग-अलग ढंग से पड़ता है। कई बार यह देखा जाता है कि कुछ शोर को अधिकांश लोग नापसंद करते हैं और कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो उसी शोर में आसानी से काम करते हैं और उसे पसंद करते हैं। अतः ~~इस वर्ग~~ के मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि शोरगुल को परिभाषित करना असंभव है, क्योंकि यह एक Subjective Phenomena है। छोटे बच्चे की तुतलाहट माँ के लिए कर्णप्रिय हो सकता है लेकिन पढ़ते हुए पिता के लिए Noise होता है।

शोरगुल एक तरह का Meaningless Sound (निरर्थक आवाज) होता है जो यह Disorganised शोर है। शोरगुल का श्रमिकों अथवा कर्मचारियों, या, कामगारों पर कैसा प्रभाव पड़ता है? इस संदर्भ में मनोवैज्ञानिकों ने अलग-अलग विचार प्रस्तुत किये हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि काम के दरम्यान शोर का विपरीत प्रभाव कामगारों पर पड़ता है। दूसरे वर्ग के मनोवैज्ञानिक अलग राय रखते हैं। ये प्रायोगिक अध्ययनों के आधार पर अपने विचार की पुष्टि करते हैं। इस तरह इस संदर्भ में दो तरह की विचारधाराएँ अथवा दृष्टिकोण प्रचलित हैं:—

(1) परम्परागत अथवा सामान्य विचारधारा (दृष्टिकोण)— शोर के संदर्भ में प्रथम सिद्धान्त है, जो किसी प्रयोगिक अध्ययन पर आधारित तो नहीं है पर इनके दृष्टिकोण भी अपना महत्व रखते हैं। इनका मानना है कि शोरगुल कार्य एवं कार्यकर्ता दोनों को बुरी तरह प्रभावित करता है।

(2) प्रायोगिक दृष्टिकोण:- इस विचारधारा के समर्थक मनोवैज्ञानिक अपनी विचारों एवं दृष्टिकोणों की पुष्टि के लिये प्रायोगिक अध्ययन प्रस्तुत करते हैं। इसके तहत Laboratory viewpoint एवं Factory viewpoint या सिद्धान्त को रखा जाता है। इनका मानना है कि शुरू में शोरगुल से कर्मचारी बुरी तरह प्रभावित हो जाता है जिससे उत्पादन घट जाता है, लेकिन बाद में कर्मचारी अभियोजित हो जाता है। इस प्रकार शुरू में कर्मचारी Noise से व्याकुल हो जाता है उसका ध्यानभंग होता है लेकिन जिससे उत्पादन घट जाता है, लेकिन लगातार काम करते करते वह शोर से अभियोजित हो जाता है और उत्पादन बढ़ने लगती है, व्याकुलता कम हो जाती है। मार्गन ने अपने अध्ययन में पाया कि शोर में उत्पादन बढ़ जाती है क्योंकि कर्मचारी अधिक शक्ति लगाकर ध्यान से काम करता है।

इस संदर्भ में कई प्रायोगिक अध्ययन किये गये। वर्नर एवं वर्नर का अध्ययन काफी महत्वपूर्ण है। इन्होंने अपना अध्ययन प्रयोज्य को दो स्थितियों Noise एवं Peace में रखकर किया और पाया कि शोरगुल की परिस्थिति में अधिक शक्ति का खर्च करनी पड़ती है। उन्होंने अपने प्रयोग में यह भी पाया कि अनियमित शोरगुल में नियमित (Continuous) शोरगुल की तुलना में अधिक अच्छा होती है। यह प्रयोग दो परिस्थितियों शोरगुल एवं शांत पुनः नियमित एवं अनियमित में किया जो Laboratory theory of noise का समर्थन करता है।

दूसरी तरफ इसी से मिलता-जुलता एक दूसरा अध्ययन फोर्ड ने किया और पाया कि शोरगुल एवं शांत दोनों परिस्थितियों में ध्यानभंग होता है और कार्यकुशलता प्रभावित होता है, लेकिन शोर में ध्यानभंग अधिक होता है। केसल एवं डेलनबेक ने अपने अध्ययन में पाया कि नियमित शोरगुल (Continuous Noise) की तुलना में अनियमित शोर (Discontinuous एवं Disorganised Noise का श्रमिक की कार्यकुशलता पर कुछ अधिक बुरा प्रभाव पड़ता है। इसी तरह अन्य कई अध्ययन भी किये गये।

वाट्सन एवं रडम्स (1946) ने अपने अध्ययन में पाया कि शोरगुल का विपरीत प्रभाव कर्मचारियों की श्रवण शक्ति पर पड़ा। शोरगुल के कारण उत्पादन में थोड़ा वृद्धि अवश्य हुई लेकिन कर्मचारियों की सुनने की शक्ति घट गई। कुछ अध्ययन बताते हैं कि शोर में उत्पादन बढ़ाने के लिए कर्मचारी अधिक शक्ति लगाते हैं, लेकिन उन्हें थकान भी अधिक होती है।

मनोवैज्ञानिकों का दूसरा दल इससे अलग नतीजे पर पहुँचता है। इनका मानना है कि शोरगुल कर्मचारियों की सक्रियता बढ़ाता है और एक खासमात्रा में शोर रहने पर उत्पादन में भी वृद्धि देखा जाता है। डफी आदि का अध्ययन इसका पुष्टि करता है।

इस प्रकार समालोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाने पर हम पाते हैं कि प्रयोगात्मक स्थिति एवं कारखाना या उद्योग की स्थिति में अन्तर है। प्रयोग नियंत्रित स्थिति में सीमित समय के लिए कुछ दिनों तक होता है जबकि कारखाना में प्रतिदिन कर्मी को कम से कम आठ घंटे के लिए काम करना होता है। दोनों की अवस्था भी अलग-अलग होती है। इसके बावजूद यह स्पष्ट हो जाता है कि शोर का कैसा प्रभाव उत्पादन एवं उत्पादकता पर पड़ता है? यह मूलतः तीन बातों पर निर्भर करता है।—

1.) काम का स्वरूप। - कार्यकुशलता पर शोर का प्रभाव कैसा पड़ता है? यह Nature of work पर बहुत हद तक निर्भर करता है। यदि किसी काम को पूरा करने में विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है तो Noise का अधिक बुरा प्रभाव पड़ता है। जैसे टाईप करते समय शोर का बुरा प्रभाव अधिक पड़ता है, जबकि यांत्रिक कार्यों को करते समय ऐसा नहीं होता है। बर्टलेर ने पाया कि दिलचस्प एवं साधारण काम पर शोर का प्रभाव नहीं पड़ता है, जबकि कठिन एवं मानसिक कार्यों पर शोर का अधिक बुरा प्रभाव पड़ता है।

(ii) शोर का स्वरूप :- शोरगुल का प्रभाव Nature of noise पर भी निर्भर करता है। यदि शोरगुल लगातार होने वाला निश्चित स्वरूप का होता है तो उसका प्रभाव शीघ्र समाप्त हो जाता है। इसके विपरीत Discontinuous Noise एवं Disorganised noise ज्यादा विचलित करता है। ब्रेडबेंट ने बताया कि ~~शोर~~ अधिक जोरदार शोर बुरा प्रभाव डालता है।

(iii) श्रमिक का स्वरूप :- कर्मचारी की मनोवृत्ति, रुचि, समर्पण आदि पर भी निर्भर करता है। कुछ कर्मचारी ऐसे होते हैं जिन्हें शोरगुल ज्यादा प्रभावित नहीं करता है, जबकि कुछ कर्मचारी ज्यादा संवेदनशील एवं ग्रहणशील होते हैं; ऐसे लोग शोर से अधिक विचलित हो जाते हैं कल्पित एवं स्मिथ आदि का अध्ययन महत्वपूर्ण है। बार्टलेट ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि थके, ~~नीरस~~ नीरस, असमायोजित कर्मचारी तथा ऐसे लोग जो अपने काम को अरुचिकर एवं कठिन मानते हैं वे शोर से अधिक विचलित होते हैं। इसी तरह श्रमिक या कर्मचारी की शारीरिक स्थिति, उम्र, मानसिक अवस्था आदि के लिहाज से प्रत्येक व्यक्ति पर शोर का प्रभाव अलग-अलग मात्रा अलग-अलग ढंग से पड़ता है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि कार्यकुशलता पर शोरगुल का प्रभाव पड़ता है। यह कार्य के स्वरूप, कर्मचारी के स्वरूप एवं शोर के स्वरूप पर निर्भर करता है कि प्रभाव की मात्रा किस व्यक्ति पर कैसा पड़ेगा।

रमेन्द्र कुमार सिंह
06.07.2020